B.A.(Education),Part-1,paper-ll.
Presented by Dr.Pallavi
Topic- मध्यकालीन शिक्षा (Medieval Education)

5.1प्रस्तावना (Introduction)-

ई० पू० चौथी शताब्दी में मौर्य साम्राज्य की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। चन्द्रगुप्त मौर्य (324 ई० पू० से 300 ई० पू०) मौर्य वंश के संस्थापक थे । इस काल में इनके प्रधानमंत्री चाणक्य थे ,जिन्होंने 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक की रचना की। इस पुस्तक को आज भी अन्य पुस्तकों की भांति मान्यता प्राप्त है। इस पुस्तक को पढ़ने से पता चलता है कि शिक्षा का स्तर बहुत ऊंचा था। चाणक्य (कौटिल्य) के अलावे अन्य विद्वानों द्वारा अनेकों पुस्तकों की रचना की गयी जैसे भद्रबाहु कृत 'कल्प सूत्र',पतंजलि कृत 'महाभाष्य', पाणिनि कृत 'अष्टाध्यायी, वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' तथा कात्यायन कृत 'वाजसनेयी संहिता'। अशोक सम्राट ने भी अनेक राजाज्ञाएँ निर्यात को जिन्हें शिलालेख कहा जाता है जो 45 स्थानों पर मिली हैं। इससे यह पता चलता है कि जन साधारण में भी शिक्षा का प्रसार था।

5.2 गुप्तकाल (Gupta Period)

गुप्तकाल (300 ई०-500 ई०) को भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। इसका कारण यह है
इस काल में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति हुई। जैसे संस्कृति, दर्शन, शिक्षा तथा विज्ञान । इस काल में समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया । संभवतः चंद्रगुप्त द्वितीय को ही विक्रमादित्य के रूप में प्रसिद्धि मिली क्योंकि महाकवि नाटककार कालिदास, धन्वन्तरि (बौद्ध) घटकपर (कवि) क्षपसार (खगोलज्ञ), वररुचि (वैयाकरणाचार्य) तथा बेताल भट्ट जैसे विख्यात वालों से सुशोभित या इस काल में असंग, वसुबंधु, कुमारजीव जैसे बौद्ध विद्वानों ने अपनी महान कृतियों की रचना की। यह सब लिखने का तात्पर्य यह है कि मध्ययुग प्रारम्भ होने से पहले किसी भी शताब्दी में भारतवर्ष में शिक्षा की गति चलती रही । भारतीय मध्यकाल तगभग 800 ई० में 1250 ई. तक का माना जाता है। इस कात को मुस्लिम काल भी कहा जाता है। यह लिखना भी आवश्यक है कि शासक वर्ग मुस्लिम थे, फिर भी ब्राह्मण शिक्षा कुछ क्षेत्रों में प्रचलित थी।

5.3 दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में शिक्षा मुस्लिम शासन के प्रथम तोन-चार सौ वर्षों तक अस्थिरता का वातावरण बना रहा। उत्तरी और पश्चिमी भारत में अनेक राजपूत शासक बने रहे । अतः बाहाण शिक्षा व्यवस्था उन स्थानों पर किसी-न-किसी रूप में प्रचलित रही । ॥ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में महमूद गजनी ने अनेक आक्रमण किये। इस बार 'सन् 1192 में मुहम्मद गोरी में पृथ्वीराज को हराकर मुस्लिम शासन को स्थापित किया। यह स्वाभाविक था और वह सभी काल में होता रहा कि शासक वर्ग अपनी समता, संस्कृत, भाषा आदि का प्रचार और प्रसार भारत में करें। अतः वैदिक तथा बौद्ध शिक्षा अवस्था को उत्तर भारत में बहुत क्षति पहुंची । माना जाता है कि आक्रमणकारियों मे यहाँ के विश्वविद्यालयों को बहुत क्षति पहुंचायी। मुहम्मद गजनवी शिक्षा प्रेमी था और उसने अपने देश में शिक्षा का काफी प्रचार किया था फिर भी उसमें भारत के शिक्षा केन्द्रो को बहुत क्षति पहुंचाया। मुहम्मद गोरी को भारत में मुस्लिम शासन का स्थापना का श्रेय दिया जाता है। वह पहला सुल्तान था जिसने मुस्लिम संस्कृति का विकास करने हेतु अजमेर में स्कूल तथा इसी प्रकार को अन्य संस्थाएं खोली । उसका शासनकात बडुत ही छोटा रहा क्योंकि नीतिबद्ध तरीके से शिक्षा संबंधी योजना बनाकर कार्य नहीं कर सका। मोहम्मद गोरी के पश्चात् कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का सुल्तान बना। वह केवल अपने शासनकाल में मस्जिद बनवाने में ही व्यस्त रहा । इल्तुतमिश 1211 से 1226 ई0 तक सुल्तान रहा। उसने सर्वप्रथम दिल्ली में 'मदरसा स्थापित किया । रजिया सुल्ताना चार साल के लिए सुल्तान बनी और उसने कुछ स्कूल बनवाए । तत्पश्चात् नसीरुद्दीन महमूद सुल्तान बना, जिसने 1246-1266 ई० तक दिल्ली का शासन संभाला। वह स्वयं विद्वान् था और विद्वानों का

आदर करता था। उसने जालंधर में एक कॉलेज की स्थापना की। ग्यासुद्दीन बलवन 1266 से 1286 ई० तक शासक रहा वह भी विद्वानों का आदर करता था और अनेक विचारक उसके दरबार में थे । इसके बाद खिलजी वंश का आरम्भ हुआ। इसमें दो शासकों ने 26 वर्षों तक राज किए। इस वंश की खास उपलब्धि यह रही कि जलालुद्दीन ने शाही पुस्तकालय की स्थापना करके अमीर खुसरो को उसका निरीक्षक नियुक्त किया। अलाउद्दीन खिलजी ने 20 वर्षों तक शासन किया वह स्वयं निरक्षर था परन्तु उसने हौजखास में एक मदरसा स्थापित किया। उसके बाद तुगलक वंश की स्थापना हुई । तुगलक वंश में सुलतान मुहम्मद तुगलक 1325 1351 ई. तक सुलतान रहे। इनके शासनकाल में दूसरे देशों से अनेक विद्वान् दिल्ली आए। 1346 ई० में उसने दिल्ली में एक मदरसा बनवाया तथा उसके साय एक मस्जिद भी जोड़ा परन्तु उसका मूर्खतापूर्ण निर्णय यह था दिल्ली से दौलताबाद राजधानी बदलने का । इसका कारण दिल्ली को इस्लामिक केन्द्र बनवाने की, इसकी योजना खटाई में पढ़ गई। इसके पश्चात् फिरोजशाह तुगलक सुल्तान बना और उमनं 1351-1388 ई० तक शासन किया। वह स्वयं प्रसिद्ध शिक्षाविद् था। वह हिन्दी विद्वानों का भी आदर करता था। शिक्षा के विकास हेतु उसने अपने राज्यों में कई विद्वान् भेजे । पुराने मदरसों की मरम्मत की और नये मदरसे बनवाये । उसने लगभग 30 मदरसों की स्थापना की। और उनके व्यय भी उचित प्रबंध किया। ख्याति प्राप्त दिल्ली का मदरसा फिरोजशाही इसी का बनवाया हुआ है। मदरसों की देखभाल के लिए बड़ी-बडी जागीरें इनके साथ जोड़ीं। इसके समय के अंत तक भारतवर्ष में लगभग 1000 मदरस बनवाये गये थे। इसके पश्चात सैय्यद और लोदी वंश के राजाओं ने कोई उल्लेखनीय काम नहीं किये। सिकन्दर लोदी जिसका काल 1498 से 1517 ई0 है स्वयं एक कवि था। उसने सैनिक अधिकारियों के लिए अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध किया। इसके समय में कुछ स्तरीय साहित्य का सूजन हुआ। इसने कुछ मदरसे कुछ भागों में स्थापित किये । एक महत्त्वपूर्ण कार्य अवश्य हुआ कि उसने हिन्दुओं के लिए भी मदरसों के दरवाजे खोल दिये।

बंगाल राज्य में हुसैन शाह(1493-1519 ई०) तथा नुसरत शाह (1519-1533) ने अनेक स्कूत तथा कॉलेज खोले तथा उनके खर्च का भी प्रबंध किया । बंगला भाषा तथा साहित्य का काफी विकास हुआ। गुजरात में भी कई मकतब और मदरसे खोले गये । कश्मीर के सुलतान जैनुल आबिदीन (1420-1470 ई०) को फारसी, संस्कृत और तिब्बती भाषाओं का अच्छा ज्ञान था और वह एक कवि भी था । उसने अनेक विद्वानों को संरक्षण भी दिया। अरबी और फारसी को अनेक ग्रथो का स्थानीय भाषाओं अनुवाद कराया। महाभारत तथा राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद किया गया। दक्षिण भारत में अहमदनगर तथा गोलकुंडा में अनेक मकतब और मदरसे स्थापित किये गये । विजय नगर राज्य में 13361614 ई) हिन्दू धर्म, संस्कृति, दर्शन व्याकरण आदि पर उत्कृष्ट ग्रंथों की रचना को गयी। कुछ लोगों का कहना है कि कृष्णदेव राय(15091529 ई०) के शासनकाल में दक्षिण भारत में एक नये युग का शुभ आरम्भ हुआ।

5.4 मुगलकाल में शिक्षा (Education During Mughal Period) मुगल काल का आरम्भ 1526 ई० में हुआ। बाबर इसका संस्थापक हुआ। उसने केवत चार वर्षो तक राज्य किया। इसने मकतबों और मदरसों की उन्नति पर बहुत ध्यान दिया। शहारते आम नामक एक संस्था खाला । जिसका कार्य शिक्षा संस्थाओं की उन्नति करना था। बाबर के पश्चात् उसके पुत्र हुमायूं ने
(1530-1540 ई०) तथा (1555-1556 ई०) तक राज्य किया। उसने दिल्ली में एक मदरसे को स्थापना की और पुराना किला में एक पुस्तकालय खोला। बीच का समय (1540-1545) तक शेरशाह जो सूरी वश का था दिल्ली का शासक बना । शेरशाह ने कुछ अच्छे कार्य आरम्भ किये ,परन्तु पूर्ण कोई भी नहीं कर सका क्योंकि शेरशाह और हुमायूं दोनों का समय एक दूसरे से लड़ने में बीत गया । तत्पश्चात् 1556 ई० में अकबर मुगल साम्राज्य का बादशाह बना और उसने 1605 ई. तक राज्य किया। वह मुगल बादशाहों में सबसे महान माना जाता है। अकबर स्वयं निरक्षर था परन्तु शिक्षा और विद्वानों का आदर करता था। उसने
मकबरा और मदरसों की स्थापना और देखभाल पर बहुत ध्यान दिया। फतेहपुर सीकरी, आगरा एवं अन्य स्थानों पर मदरसे खुलवाए और उनमें विद्वान शिक्षकों के द्वारा शिक्षण करवाया गया और यह व्यवस्था को कि मदरसों में हिन्दु छात्र को शिक्षा प्राप्त कर सकें। अकबर ने एक फरमान जारी करवाया कि अगर किसी धनवान व्यक्ति को कोई संतान नहीं हो तो उसको मृत्यु के पश्चात् सारी जामदाद मदरसों के खचों के लिए है दी जाए। इसके पश्चात् जहाँगीर और शाहजहाँ ने (1605-1659) तक राज्य किये । इन दोनों ने अकबर को राह पर चलते हुए मदरसों की

स्थापना और रख-रखाव पर भी उचित ध्यान दिये । शाहजहाँ को बेटी जहाँनारा ने आगरे में एक मदरसा को स्थापना की और उसे जामा मस्जिद से संबंधित किया। शाहजहाँ का सबसे बड़ा बेटा दारा शिकोह अरबी, फारसी तया संस्कृत का विद्वान था। उसने उपनिषद्, भगवद्गीता, है योगवाशिष्ठ आदि अनेक ग्रंथों का स्वयं फारसी में अनुवाद किया। उसके बाद औरंगजेब (1658-1707 ई०) तक मुगल साम्राज्य का बादशाह बना । वह कट्टर मुसलमान था और उसका पुरा समय मुगल सामान्य के विस्तार करने के क्रम में, लढाई झगडे में बीता । उसने मुस्लिम धर्म शास्त्रों को पढ़ने पर जोर दिया । मुगल शासकों में कोई ऐसा बादशाह नहीं हुआ जो स्थिर से शासन कर सके और शिक्षा पर ध्यान दे सके। । धीरे-धीरे मूगल राज्य सिमटने गया और कमजोर होता गया ।

5.5 मुस्लिम शिक्षा की विशेषताएं (Special Features of Muslim Education)

इस्लाम धर्म में भी हिन्दू धर्म के समान शिक्षा को महत्व दिया गया है। मुस्लिम शासकों ने इस्लाम धर्म का प्रचार जाने की भावना से भरी होकर भारत में मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ की। कभी ऐसा भी हुआ कि कुछ मुस्लिम सम्राटो ने भारत की प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समान करने को कोशिश की। यद्दपि अकबर तथा कुछ अन्य शासको ने मुस्लिम तथा प्राचीन शिक्षा तथा संस्कृति की व्यवस्था को मिलाने की कुछ व्यवस्था की । कालान्तर में हिन्दू भी अनेक मदरसों से लाभ उठा कर राजपदो के योग्य बने । अधिकांश हिन्दू केन्द्र अपने क्रम में चलते रहे । यद्यपि कुछ अदुरदर्शी शासको ने उन्हें नष्ट कर दिया । परन्तु इसका प्रभाव गतिशील नही रख सका और हिन्दू शिक्षा के प्रतिष्ठान भी चलते रहे और अपने कार्य के रहे। इस काल की महत्वपूर्ण घटना यह रही कि दो तरह की शिक्षा व्यवस्था चलाती रही। एक हिन्दू शिक्षा व्यवस्था और दूसरी मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था।

उद्देश्य- इस बात पर शासकों के शासन काल पर दृष्टिपात करने में यह निष्कर्ष निकता है. कि शिक्षा के उदेश्यों में भी परिवर्तन होते रहे ।
समग्र रूप से अगर देखा जाय तो निम्नलिखित उद्देश्य उभर कर आते हैं।

1. धार्मिक उद्देश्य-- इस्लामी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों को धर्मपयण बनाना था। आः इस्लामी शिक्षा का मूल उद्देश्य धर्म की शिक्षा देना था। यही कारण है कि प्रत्येक मस्जिद के साथ एक मकतब होता था । इस तरह सामूहिक रूप से नमाज अदा करने और खुदा की इबादत साथ-साथ हो जाती थी ।

2. ज्ञानार्जन-इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद ने प्रत्येक सच्चे मुसलमान को ज्ञान प्रापा करने को प्रेरणा दी है और उनका विचार था कि हम ज्ञान के बिना धर्म का पालन नहीं कर सकते ।
3, इस्लाम धर्म का प्रचार-इस्लामी शिक्षा में लोगों का ऐसा विश्वास था कि जो मुसालमान ईमानदारी से प्रचार करता है । उससे खुदाबंद करोम खुश रहता है। मकतब में बातकों (छात्रो) को कुरान को उन बातों को कंठस्थ कराया जाता था जो एक मुसलमान को नमाज या अन्य धार्मिक आचरणों के लिए आवश्यक मानी जाती थी।

4. नैतिकता का विकास-इस्लामी शिक्षा में लोगों के चरित्र का निर्माण करना भी था क्योंकि इस्लाम में चरित्र-निर्माण पर बहुत अधिक बल दिया गया है।
5. सांसारिक उद्देश्य-इस्लामी शिक्षा का उद्देश्य सांसारिक वैभव भी प्राप्त करना था । कुछ विचारक इसे इस्लामी शिक्षा को दुर्बलता मानते हैं।

6, राजनैतिक उद्देश्य --शासक शासन के कार्य के लिए अपनी भाषा में शिक्षिा करना चाहते थे। इस उद्देश्य से शासन काल में सहायता मिलती थी। इसी कारण मुस्लिम शिक्षा, को पूरी तरह शासकों से हो प्रेरणा मिली। वैदिक और बौद्ध काल में शासक वर्ग शिक्षा के क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते थे । आपातकाल में शिक्षा व्यवस्था में शासन की सहायता ली जाती थी।

7. पाठ्यक्रम --प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में कुरान को आयतों और प्रार्थनाओं को याद करना या कहीं-कहाँ इदोस, कविता और नीतिशास्त्र को शिक्षा देना सम्मिलित था। सादी का 'पदनामा' भो पढाया जाता था। ठीक उच्चारण पर बड़ा ध्यान दिया जाता था । इसके पश्चात् लिखने को शिक्षा दी जालो थी। फिर फारसी का व्याकरण रटाया जाता था। इसके बाद सादी का 'पन्दनामा' भी पढाया जाता था । ठीक उच्चारण पर बड़ा ध्यान दिया जाता था। इसके पश्चात् लिखने की शिक्षा दी जाती थी। फिर फारसी का व्याकरण रटाया जाता था। इसके बाद सादी के गुलिस्तान' तथा 'बोस्ता' समझाकर पढ़ाए जाते थे, जिनमें नैतिक शिक्षा भी मिलती थी, साथ ही लिखने की कला में प्रतिदिन चार- पाँच घंटे लगाये जाते थे।

मदरसा में शिक्षा का माध्यम साधारणतः फारसी भाषा थी। उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम दो प्रकार का था। धार्मिक तथा सांसारिक । धार्मिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कुरान शरीफ और उसका अध्ययन, इस्लामी इतिहास और कानून पर बल दिया जाता था । सांसारिक पाठ्यक्रम में अरबी, फारसी, व्याकरण, साहित्य, गणित, इतिहास, भूगोल, यूनानी चिकित्सा, कृषि, दर्शन, कानून, ज्योतिष आदि सम्मिलित थे । कुछ मदरसों में
में शिल्प एवं वास्तुकला को भी महत्त्व दिया जाता था।

8. प्रारम्भिक शिक्षा में प्रवेश विधि--इस्लामी शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत प्रवेश के समय 'बिस्मिल्लाह संस्कार' किया जाता था। जब बालक ठीक 4 वर्ष 4 माह और 4 दिन का होता था । तब यह संस्कार सम्पन्न किया जाता था। उस दिन बालक को नये कपड़े धारण कराये जाते थे बालक के समक्ष कुरान की भूमिका और कुरान के 55वें अध्याय को कुछ आयतें रखी जाती थीं तथा बालक से यह दोहरवाया जाता ।

9. गुरु शिष्य सम्बन्ध गुरु की कृपा तथा सहवास से ही ज्ञान, सदाचार तथा धर्म की शिक्षा संभव था। गुरु का आदर तथा सेवा करना शिष्य का कर्तव्य था।

10. शिक्षक का समाज में स्थान-शिक्षकों का समाज में बहुत मान होता था। साधारणतः वे धार्मिक व्यक्ति हुआ करते थे। यद्यपि शिक्षक समुदाय इतना धनी नहीं था पर उनकी समाज में प्रतिष्ठा थी। उनकी आवश्यकताएं कम थीं।

11. अध्यापन तथा शिक्षण विधि --सर्वप्रथम बच्चे को लिपि का ज्ञान आँख तथा कान से कराया जाता था । ठीक उच्चारण पर बडा ध्यान दिया जाता था ।समझने पर प्रारम्भिक अवस्था में कम ध्यान दिया जाता था ।रटने पर ज्यादा जोर था ।इसके बाद लिखने की शिक्षा दी जाती थी ।
मदरसों मैं भाषण और प्रयोग पद्धति प्रचलित थी । मदरसा शब्द ही इस बात का द्योतक हैं कि दरस अथवा भाषण द्वारा शिक्षा दी जा सकता है ।
मदरसों में तर्क पद्धति भी अप

12. पुरस्कार तथा शारीरिक ढण्ड--छात्रों को उसकी योग्यता एवं कौशल से प्रसन्न होकर पारितोषिक देकर अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाता था । अध्ययन समाप्ति पर प्रमाण-पत्र तथा सनद दिए जाते थे । विशेष योग्यता का प्रदर्शन करने वाले छात्रों को राज्य में उच्च अधिकारीयो का पद प्रदान करना साधारण-सी बात थी ।

अध्यापक बालक की गलती भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। दण्ड व्यवस्था अति कठार था। छात्रों को बेत, कोड़ा एवं थप्पड़ घूसों से पीटना मामूली बात थी।

13. स्त्री शिक्षा-मुस्लिम काल में पर्दा प्रथा के कारण स्त्री शिक्षा सार्वजनिक नहीं हो सकी । मुस्लिम युग में उच्च स्त्री शिक्षा का कोई समूचित प्रबन्ध न था। जन-साधारण के लिए तो लड़कियों की प्रारम्भिक शिक्षा का भी व्यवस्थित ढंग से प्रबंध न था।

मुगलकाल में ऊंचे घरों की लड़कियों को शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता। इस युग में कई उच्च कोटि को विदुषी नारियों के उदाहरण मिलते हैं। बाबर की पुत्री गुलबदन ने 'हुमायूँनामा' लिखा। सुल्ताना रजिया, साम्राज्ञी नूरजहाँ फारसी भाषा की प्रसिद्ध कवियित्री थीं। जेबोन्नेसा और महानारा भी इस युग की देन हैं। राजघराने की लड़कियाँ घर पर ही शिक्षा प्राप्त करती थी।

14. शिल्प शिक्षा-मुस्लिम शिक्षा विशेषतः शिल्पोन्नति के लिए प्रसिद्ध है। हाथी दाँत का काम रेशम व जरी का काम, रथ और युद्ध सामग्री का निर्माण, मलमल को बुनाई आदि हस्त कौशल के लिए मुस्लिम कारीगर विश्व विख्यात थे । भवन निर्माण चित्रकला, संगीत, नृत्य जैसों ललित कलाओं का पोषण और संरक्षण इस काल के मदरसों में ही हुआ करता था।
15. मुस्लिम कालीन शिक्षा केन्द्र-मुस्लिम प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था तो प्रत्येक मस्जिद अपने मुस्लिम आबादी के आसपास होती थी । किन्तु उच्च शिक्षा नगरों हो केन्द्रित रही जिसका मुख्य कारण यह था कि भारतीय मुस्लिम सभ्यता तथा शासन सत्ता अधिकांशत: नगरां में ही रही ।

कुछ केन्द्र कुछ विशेष विधियों के लिए प्रसिद्ध हुए। लाहौर और स्यालकोट गणित तथा न्ज्योत्तिष के केन्द्र थे। दिल्ली में इस्लामी प्रचलनों तथा प्रधाओं पर पाण्डित्य की कमी न थी। रामपुर तर्क तथा चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध था। लखनऊ शिया-शिक्षा का केंद्र बन गया। हैदराबाद आगे चलकर उर्दू शिक्षा का केन्द्र बन गया।
16. नि:शुल्क शिक्षा-मकतबों तथा मदरसों में नि:शुल्क शिक्षा को व्यवस्था थी । इन शिक्षा-संस्थाओं के खर्च का सम्पूर्ण भार इनके संस्थापका तथा संचालकों अधवा शासको द्वारा वहन किया जाता था ।

17, कक्षा-नायकीय पद्धति-मुस्लिम शिक्षा संस्थाओं में कक्षा-नायकीय पद्धति प्रचलित थी। इस पद्धति में अध्यापक अपने अध्यापन कार्य में उच्च कक्षाओं के मेधावो छात्रों की सहायता लेते थे ।
18. भाषा को प्रोत्साहन-फारसी मुस्लिम शासकों की शासन को भाषा थी। इस कारण इस भाषा को बहुत प्रोत्साहन मिला। इस भाषा के विद्वानों को राजपदों के लिए बहुत मांग थी । अरबी भाषा को भी प्रोत्साहन मिला।

19. साहित्य तथा इतिहास का विकास -अनेक मुस्लिम शासकों ने विद्वानों को संरक्षण दिया, जिसके फलस्वरूप उच्च स्तर के साहित्य का पूजन हुआ। कुछ शासकों ने अपनी आत्मकथा भी लिखी। कुछ विद्वानों इतिहास पर ग्रंथ लिखे ।

इतिहास पर प्रसिद्ध पुस्तकें निम्नलिखित हैं

1. जियाउदवरनी द्वारा लिखित 'तारीख-ए-फिरोजशाही' (13वीं शताब्दी). 2. बाबर द्वारा लिखित 'तुजके-बाबरी' (बाबर के संस्मरण), 3. बेगम गुलबदन का 'हुमायूँनामा' (16वीं शताब्दी), 4. अबुल फ़ज़ल का 'अकबरनामा' (16वीं शताब्दी), 5. जहाँगीर का 'तुजे-जहाँगीर' (17वीं शताब्दी), 6. मुहम्मद मासूम का 'फतुहा-ए-औरंगजेब' (17वीं शताब्दी)।

20. परीक्षा प्रणाली-प्रति: शिक्षक स्वयं परीक्षा लिया करते थे।
21. व्यावसायिक शिक्षा मुस्लिम शिक्षा व्यवस्था में व्यावसायिक शिक्षा का भी प्रावधान था ।